समास

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

शेषांश :—

(5.) अलुक् तत्पुरुष समास → जिस समास में पहले पद की विभक्ति का लोप न हो, उसे अलुक् तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे—

खेचर - खे (आकाश में) विचरण करनेवाला
सरसिज - सरसि (तालाब में) जन्म लेनेवाला

⇒ विशेष - ऐसे पद प्रायः तत्सम होते हैं। उपर्युक्त उदाहरणों में क्रमशः 'ख' शब्द में एवं 'सरस' शब्द में सप्तमी विभक्ति का 'ए' कार एवं 'इ' कार संयुक्त है, जो समास के बाद भी लुप्त नहीं हुआ है।

▷ बहुव्रीहि समास ——

★ जिस समास में प्रयुक्त पदों का अपना अर्थ न होकर अन्य अर्थ प्रधान हो, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे -

नीलकंठ - नीला है कंठ जिसका वह, अर्थात शंकर।

लम्बोदर - लम्बा है उदर जिसका वह, अर्थात गणेश।

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों का क्रमशः अर्थ है - नीला कंठ एवं लम्बा उदर (पेट), परन्तु इन पदों का इतना ही अर्थ न होकर क्रमशः शंकर एवं गणेश अर्थ अभिप्रेत है; अतः ये पद बहुव्रीहि समास के उदाहरण हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि बहुव्रीहि समास में दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद के विशेषण हो जाते हैं।

बहुव्रीहि समास के मुख्य चार भेद हैं —

(1.) समानाधिकरण बहुव्रीहि

(2.) व्यधिकरण बहुव्रीहि

(3.) तुल्ययोग या सह - बहुव्रीहि

(4.) व्यतिहार बहुव्रीहि

(1.) समानाधिकरण बहुव्रीहि → जिस बहुव्रीहि समास में दोनों पद कर्ता कारक के हों, उसे समानाधिकरण बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे —

पीताम्बर - पीत है अम्बर जिसका वह, अर्थात विष्णु।

यहाँ पीत एवं अम्बर (वस्त्र) दोनों ही पद विभक्तिरहित एवं कर्ता कारक के हैं।

— क्रमशः